महर्षिवियोग शोक

अर्थात्

श्री १०८ स्वामीदयानन्दसरस्वती जी के मरण समय
का शोक जो उक्त महर्षि जी के स्मरणार्थ
तल्लघुतरशिष्य पं० ज्वालादत्त शर्म्मा ने
काव्य में वर्णन किया ॥

सरस्वतीप्रेस–इटावा में

श्यामलाल शर्मा के प्रबन्ध से छपा

संवत् १९५५

प्रथमवार १०००] [मूल्य -)

अष्टाध्यायी विवरण ॥

संस्कृत और भाषावृत्ति के साथ प्रतिमास मासिक क्रम से प्रकाशित होता है—जिन महाशयों को लेना हो निम्नलिखित पते से पत्र व्यवहार करें ॥

वार्षिक मूल्य	२।≈)
पूरे पुस्तक का पाश्चात्य मूल्य	७।)
पूरे पुस्तक का अग्रिम मूल्य	५)
दशनियम शिखरिणी	)।
वदनिविसूचिका (दहेज खण्डन	)॥
पुरुषसूक्त	≈)

मैनेजर सरस्वती प्रेस—इटावा

ओ३म्

यतिशोक !!

हा शोक! हा शोक!! हा शोक !!!

अत्यन्त शोक का विषय है कि यह आर्यावर्त्त देश अतिकाल से अवनति में गिरा हुआ है पर किसी प्रकार उस अवनति का पार नहीं आता, प्राचीन इतिहासों के देखने से विदित होता है कि इस आर्यावर्त्त का कोई समय ऐसा था कि यहां विद्या गुण कला कौशलादि आश्चर्य कर्म विद्यमान थे और नाना प्रकार की धनसमृद्धियों से युक्त मनुष्य थे अब यह समय है कि आर्यावर्त्तीय जन उन कामों की मूल वेद विद्या को छोड़े और इस देश की प्राचीन व्यवस्था को भूले हुए घोर अज्ञानान्धकार में घिरे महादुःख भोग रहे हैं। और जो दयालु परोपकारी देशहितैषी सज्जन महाशय इस देश की पूर्वावस्था पर ध्यान देकर इसके सुधार ने का कुछ यत्न करते हैं उन को प्रायः बड़े २ विघ्न उपस्थित होते हैं संप्रति जिन्हों ने इस देश की दीन दशा और वेदोक्त धर्म का प्रचार सर्वथा शिथिल देख कर इस दीन दशा के मिटाने और वेदोक्त धर्म का यथार्थ प्रचार कराने के लिये प्रतिज्ञा की और तदनुसार नाना देश देशान्तरों में पर्यटन करते और अनेकों प्रकार से सुख दुःख को सहते हुए वेदोक्त धर्म का प्रचार और देश की उन्नति कर रहे थे वे वेदधर्मोपदेशक सर्वशुभचिन्तक देशोन्नतिकारक जगदुद्धारक वेदविद्याप्रचारक सकलगुणनिधान ब्रह्मज्ञानप्रकाशमान् जगद्विख्यात श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वती जी आज सं० १९४० कार्त्तिक कृष्णा ३० मङ्गल के दिन सायंकाल के छः बजे इस असार संसार का परित्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए यह अविद्यान्धकार विनाशक वेदोपदेशक मार्त्तण्डमण्डल का अस्ताचलावलम्बन होना किस देशहितैषी सज्जन को अत्यन्त शोक देने वाला न हुआ होगा। यह अन्धकार इस देश में तो क्या किन्तु द्वीप द्वीपान्तरों में भी सज्जनों को शोक देने वाला हुआ होगा क्योंकि उक्त वेदोपदेशक सूर्य के प्रकाश से जो वेद के अगोचर विषय सज्जनों के दृष्टि गोचर होते थे वे फिर अज्ञानान्धकारावृत हुए अब वैसों मुख से मिलेंगे। हा! ऐसा कौन विद्वान् देशहितैषी सज्जन होगा कि जिसका हृदय इस दारुण

दुःख से दुःखित न हुआ हो । शंकर दिग्विजय के देखने से विदित होता है कि श्रीमान् शङ्कराचार्य्य जीने वेद विरुद्ध ४८ मतमतान्तरों का खण्डन कर इस आर्यावर्त्त में वेदमत का स्थापन किया था उन से इतर विद्वानों में इस समय श्रीमत्-स्वामीदयानन्द सरस्वती जी ने आधुनिक वेद विरुद्ध अनेकों मतमतान्तरों का खण्डन कर वेदमत का स्थापन किया और कर रहे थे । उक्त महात्मा का विचार और परोपकार को देखने और विचारने वाले सज्जनों में ऐसा कौन जड़बुद्धि होगा कि जो प्रशंसित महात्मा के वियोग से शोकातुर न होता हो जिन्हों ने " परोपकाराय सतां विभूतयः " इस नीति का पूर्ण प्रकाश - हम लोगों को कर दिखाया अर्थात् अपने जीते जी और पीछे भी अपना सर्वस्व इस आर्यावर्त्त की उन्नति और वेदों का प्रचार होने के लिये अर्पित कर दिया हो । ऐसा कौन स्वदेशवत्सल होगा जो उन के कर्त्तव्य काम को सोच कर शोकातुर न होता हो । आर्य महाशयो ! श्रीयुत के वियोगज शोक का वर्णन क्या हो सकता है तो भी आप लोगों के सोचने के लिये उक्त महात्मा के गुणों का स्मरण कर मैं अपनी अल्पबुद्धि से इस अत्यन्त शोक का कुछ वर्णन करता हूं ॥

क्षोणीभाहीन्दुभिरभियुते वैक्रमे वत्सरेऽयः प्रादुर्भूतो द्विजवर-
कुले दक्षिणे देशवर्य्ये । मूलेनासौ जननविषये शंकरेणापरेणा-
ख्यातिं प्राप्त प्रथमवयसि प्रीतिदां सज्जनानाम् ॥ १ ॥

क्षोणी १, इभ ८, अहि ८, इन्दु १, इन संख्याक्षरों से युक्त राजा विक्रमादित्य जी के संवत् १८८१ में जो उत्तम दक्षिण देश और श्रेष्ठ ब्राह्मणकुल में उत्पन्न हुए वे अपनी कुमारावस्था में सज्जनों को प्रीति देने वाली मूलशंकर इस आख्याति को अपने जन्मनगर में प्राप्त हुए अर्थात् कुमारावस्था में उन का " मूलशंकर " नाम था जिन का अब दयानन्द सरस्वती नाम प्रसिद्ध था ॥ १ ॥

विद्याभ्यासे निखिलनिगमान् प्रापठत् सत्यमिच्छु-र्वेदज्ञानि-
प्रचुरविपदयायाशु पूर्वाश्रमेण । संसारेऽस्मिन् निजसुजनतां नी-
तिशास्त्रानुकूलामाविष्कर्त्तुं सदुपकृतये वेदमार्गाणनूनम् ॥२॥

सत्य की चाहना करते हुए उक्त महात्मा ने विद्याभ्यास में ब्रह्मचर्याश्रम से शीघ्र साङ्गोपाङ्ग वेद पढ़ा, पढ़ कर इस संसार में सज्जनों के उपकार के लिये

नीति शास्त्रानुकूल वेदमार्ग से निश्चित निज सुजनता का प्रचार करने के लिये ॥२॥

देशाद्देशान्बहुजनपदान्पर्वतादिप्रदेशान् सारंसारं विविध-
गुणिनां योगुणान्संविचिन्वन् । सत्यासत्यं बहुमतजुषामीक्षि-
तुं पर्य्यगच्छत् प्रापत्तेषु श्रुतिपथविरुद्धाननेकान्विवादान् ॥३॥

नाना प्रकार के गुणी जनों के गुणों का सार २ इकट्ठा करते हुए अनेकों मत मतान्तरों को सेवन करने वाले लोगों का सत्य और असत्य देखने को देश देश बहुत प्रकार के जनपद और पर्वतादि स्थानों (जहां २ अनेकों प्रकार का गुण जानने वाले सज्जन महात्मा रहा करते हैं उन २ अति गह्वर स्थानों) का पर्यटन करते हुए गये । उन में अनेकों वेदविरुद्ध वाद विवादों को पाया ॥३॥

सोऽयं व्योमाम्बुधिनिधिविधौ वैक्रमे वत्सरेऽस्मिन् प्राप्ते चन्द्रक्षः
यतिथिकुजे कार्त्तिके कृष्णपक्षे सायंकाले सकलजनतासौख्य-
मापूरयन्तं देहं प्रोह्य श्रुतिपदमयं ब्रह्मनिर्वाणमापत् ॥४॥

सो ये व्योम-०अम्बुधि-४-निधि-९ विधि-१ इन संख्याक्षरों में युक्त विक्रमादित्य जी के इस वर्त्तमान संवत्सर में कार्त्तिक कृष्णा अमावस मङ्गलवार के संध्या समय में सकलजनसमूह के सुख को अच्छे प्रकार पूरे करते हुए देहका परित्याग कर श्रुतिपदमय निर्वाण ब्रह्म को प्राप्त हुए ॥ ४ ॥

योब्रह्मचर्यव्रतः सदसद्विवेकी पुत्रैषणादिगृहकर्मनिवृत्तचित्तः
संन्यासमापसकलश्रुतिसिद्धमेव प्राप्तोऽद्यनिर्वृतिपदं सविहायदेहम् ॥

जो सत् असत् का विवेक करने वाले पुत्रैषणा आदि गार्हस्थ कर्मसे निवृत्त चित्त उक्त महात्मा इस ब्रह्मचर्य से समस्त वेदप्रसिद्ध संन्यास धर्म ही को प्राप्त हुए वे दयानन्दसरस्वती जी आज शरीर का परित्याग कर निर्वाण पद को प्राप्त हुए ॥५॥

यः पाणिनेर्मुनिवरस्य कृतेर्विभागान्सद्यस्तदर्थगतये खलुलो-
कवाचा । व्याख्यातवान्लघुमतीन्समवीक्ष्यबालान् प्राप्तो-
ऽद्यनिर्वृतिपदं सविहायदेहम् ॥ ६ ॥

जिन्हों ने अल्पबुद्धि बालकों को देख मुनिवर पाणिनि जी की कृति जो व्याकरण उस के विभाग अर्थात् शिक्षा, संधिविषय, नामिक, कारक, समास,

द्धी प्रत्यय तद्धित आदि विषयों का शीघ्र उन का अर्थ प्राप्त होने के लिये निरन्तर लोक वाणी से व्याख्यान किया वे श्रीमद् दयानन्दसरस्वती जी आज शरीर का परित्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए ॥ ६ ॥

अन्येषु वेदविषयेष्वपि भूमिकाद्याः सन्तीह यस्य नितरां बहवो निबन्धाः । शास्त्रेषु लोकविषयेष्वपि सत्यमिच्छोः प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥७॥

शास्त्रविषय और लोकविषय में भी सत्य की इच्छा करने वाले जिन महात्मा के और वेद विषयों में भी भूमिका आदि निरन्तर बहुत निबन्ध (अनेकों ग्रन्थ) इस संसार में विद्यमान हैं वे श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी आज शरीर का परित्याग कर निर्वाण पद को प्राप्त हुए ॥ ७ ॥

वादानुवादभयभीतजना न यस्य स्थातुं समीपमशकन्नभिमानमाप्ताः । नानापथानुमतयो यतयोऽपि हन्त प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ ८ ॥

बड़े २ अभिमान को प्राप्त अभिमानी वादविवाद करने वाले विद्वान् जन तर्कवितर्क से भयभीत हुए जिन के समीप न ठहर सके तथा बड़े २ नियम साधने वाले संन्यासी महात्मा आदि भी जिन के नियमों से भयभीत हुए समीप न स्थित हो सके। अर्थात् शास्त्रमनन और ऊर्ध्वरेतस्कत्व आदि ब्रह्मचर्य नियम जो कि श्रीमद्दयानन्दसरस्वती जी में विद्यमान थे वे बहुधा याथातथ्य दूसरे में नहीं देखे हा !! अत्यन्त कष्ट का विषय है कि उक्त महात्मा आज शरीर छोड़ निर्वाणपद को प्राप्त हुए ॥

यद्वेदवादमभिगम्य विदेशजोऽपि वेदस्य मार्गमभिशंसति तद्विरुद्धः । हा ! हन्त ! हन्त ! विधिधर्मविधानवक्ता प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ ९ ॥

जिन के वेदवाद को अच्छे प्रकार समझ कर भिन्न देश में उत्पन्न हुआ वेद से विरुद्ध बर्ताव बर्तने वाला भी पुरुष वेदमार्ग की प्रशंसा सब ओर से करता है (जैसे जर्मनीआदि नगरों के लोग जिन स्वामीद० स० जी के वादविवाद से वेदसिद्धान्त पर जिज्ञासु हो कर पत्रव्यवहार से अपनी शङ्का निवृत्ति करते रहे तथा

मुर्दों जलाना आदि वेदव्यवहारों को विदेशीय सज्जनों ने स्वीकार किया हा ! खेद, हा ! खेद वे श्रीमत् स्वा० द० जी आज शरीर त्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए ॥ ९ ॥

यस्यानुवादशरणा निजवर्णधर्मं त्यक्त्वा न जग्मुरपरैरपरोपदेशैः । आकर्षितेन मनसापि परस्य धर्मं प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १० ॥

जिन के वेद सिद्धान्त को शरण हुए जन अपने वर्ण धर्म को छोड़ सिद्धान्तविरुद्ध अन्य लोगों के उपदेशों से खिंचे हुए मन से भी परधर्म को नहीं प्राप्त हुए वे श्रीमद्द० स० जी आज शरीरका परित्याग कर निर्वाणपद को प्राप्तहुए ॥१०॥

संप्रेक्ष्य यः करुणया करुणामयेन हा ! हन्त भारतजनांश्चिरदुःखितान्नः । संप्रेषितो विधिनिधिर्जगतीश्वरेण प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ ११ ॥

हा ! अति कष्ट होता है कि हम भारत निवासी जनों को चिरकाल से दुःखित देख कर करुणामय ईश्वर ने अपनी करुणा से जो वेदविधान श्रीमद्दयानन्द स० जी संसार में भेजे थे. वे आज शरीर का परित्याग कर निर्वाण पद को प्राप्त हुए ११

हा ! लोकशोकतमसावृतभारतीयानुद्धारयिष्यति कथं तमसः परेशः । वेदोपदेशतरणिः शरणं नृणां यः प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ ११ ॥

हा ! लोक के शोक रूपी अन्धकार से आच्छादित (ढपेहुए) भारतवासियोंका इस अन्धकार से परेश-परमात्मा कैसे उद्धार करेगा. क्योंकि जो मनुष्यरक्षक वेदोपदेशक रूपी सूर्य श्रीमद्द० थे वे आज शरीर को परित्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए

संसारदुःखदलनाय समाजमार्गः संस्थापितः श्रुतिपथेन समुन्नतेन । येनोक्तियुक्तिभिरसत्पथखण्डनेन प्राप्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १२ ॥

जिन्हों ने अच्छे प्रकार उन्नतियुक्त वेद मार्ग तथा अपनी उक्ति और युक्तियों से असन्मार्ग के खण्डन से संसार का दुःख दूर होने के लिये समाजमार्ग का संस्थापन कराया सो आज श्री द० स० शरीर त्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए

यत्पौरुषं धनमथ स्मृतिबुद्धिविद्या यस्याह्निकी कृति-
रभूच्छ्रुतिसंमतानाम् । भाष्ये परोपकृतये परमार्थसिद्ध्यै
प्राप्नोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १३ ॥

जिन का पुरुषार्थ, धन, स्मृति, बुद्धि, विद्या तथा जिन का नित्य २ का काम परोपकार और परमार्थसिद्धि के लिये और वेदसम्मत ग्रन्थों के भाष्य बनाने के निमित्त हुआ वे श्री० द० स० आज शरीर त्याग कर निर्वाणपद को प्राप्त हुए १३

हा ! हन्तहन्त वसुधेचिरदुःखितापि प्राप्ता कथंचिदपि
सौख्यमतीव कष्टात् । वीरेण वेदनिधिना बत मन्दभाग्ये
प्राप्नोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १४ ॥

हा कष्ट ! हा कष्ट ! ! हे भारत भूमि तू चिरकाल से दुःखित भी थी सो वीर वेदनिधान श्री० द० स० जी से उस अतीव कष्ट से किसी प्रकार सुख को प्राप्त हुई थी, हे मन्दभागिनी बड़े कष्ट का विषय है कि उक्त महात्मा शरीर-त्याग कर आज निर्वाणपद को प्राप्त हुए ॥ १४ ॥

किं दुष्कृतं कृतमतिप्रसितं यतोत्र प्राप्तासि दुर्गतित-
रां वसुधे तथापि । दुर्दैवमेव तव दैवविकाशितं यत्प्राप्नोद्य
निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १५ ॥

हे भारतभूमि तू ने कौन बड़ा दुष्कर्म किया कि जिस से इस संसार में अत्यन्त दुर्गति को प्राप्त है तथापि तेरा विधाता ने दुर्भाग्य ही प्रकट किया जो उक्त वीर वेदनिधि श्री द० स० जी निर्वाणपद को प्राप्त हुए ॥ १५ ॥

संन्यासधर्मविषयेपि परोपकृत्यै त्यक्ता दया न खलु
येन सरस्वतीह । आनन्दयुक् प्रतिपदं निजनामतोपि प्रा-
प्तोद्य निर्वृतिपदं स विहाय देहम् ॥ १६ ॥

संन्यासधर्म में भी जिन्हों ने परोपकार के लिये अपने नाम से पद २ के प्रति दया और आनन्दयुक्त सरस्वती का परित्याग न किया अर्थात् जिन का नाम परोपकार ही के लिये " दयानन्दसरस्वती " प्रसिद्ध था वे श्री द० स० आज शरीर को परित्याग कर निर्वाण पद को प्राप्त हुए ॥ १६ ॥

नित्यानन्दीगणपतिमतंनानकीयानुदासीनूनागान्साखांजिनं-
मतसखीभावसौरांश्चशाक्तान्दादूपन्थीगिरिपुरिभवान्भारती-
यादिशैवान् योगीहंसीप्रभृतिविविधानंदगिडपाषण्डिवर्गान् ॥

नित्यानन्दीमत, गणपतिमत, नानक मत, उदासीसाधुओं के मत, नागाओं के मत, स्वामियों का मत, जैनमत, सखीभावमत, सौरमत, शाक्त मत, दादूपन्थीमत गिरि-पुरि-भारती आदिनामों से प्रसिद्ध शैवमत, योगी, हंसी, आदि नानाप्रकार के अप्रचलितमत, दण्डी पाषण्डियों के मत-॥ १७ ॥

पल्टूदासीसुथरसधनामाधवान्निर्मलान्त्रैकौलान्मौनान-
थचरणदासीमतंसाधबौद्धान् । बाबालालीमतमलुकदासीम-
तंशून्यवादान्कूकाकालीमतमथ हरिश्चन्द्रवृन्दावनीयान् ॥

पल्टूदासियों का मत, सुथर साधुओं का मत, सधनापंथियों का मत, माधवमत, निश्चय कर निर्मले साधुओं का मत, कौलमत, मौनियों का मत, इस के अनन्तर चरणदासियों का मत, साधों का मत, बौद्धों का मत, बाबालाली मत, मलूकदासियों का मत, शून्यवादियोंकामत, कूकापन्थियों का मत, कालीमत हरिश्चन्द्र का मत, और वृन्दावनीय मत-॥ १८ ॥

वामीवामाचरणशिवनारायणीप्राणनाथान् मीरावाईम-
तमथ नखीसन्तनामीकरारीन् । अन्यान्धर्मव्यतिकरमतान्
नूनमीसामसीयान्देशेश्यवनजनजाऽश्लीतसिद्धान्तहीनान् ॥

वामियों का मत, वामाचरणों का मत, शिवनारायणी मत, प्राणनाथीमत, मीरावाई का मत, नखीमत, सतनामी मत, करारी मत, इस के अनन्तर और भी धर्मविरुद्ध मत, तथा निरन्तर ईसामसीय मत, देश २ में यवन जनों से उत्पन्न हुए मत इन सब को वेद सिद्धान्तहीन-॥ १९ ॥

संवीक्ष्यैषांविविधविबुधैस्तर्किभिस्तर्कवादैःश्रौतैःस्मार्त्तैर्नि-
खिलनिगमज्ञानदैःसद्वचोभिः । श्रौतंमार्गंसदुपकृतयेप्रोक्तवा-
न्योनितान्तममृतयोमार्गंझटितिगतवान्सोयमाचार्यवर्यः ॥

सब प्रकार देख कर इन मत मतान्तरों के जानने वाले नानाप्रकार के तर्कवादी विद्वानों के साथ, समस्त वेद वेदाङ्गों का विज्ञान देने वाले श्रुतिस्मृति सम्बन्धी उत्तम तर्कवादों से जो सज्जनों के उपकार के लिये वेदमार्ग को निरन्तर कहते हुए सो ये आचार्यों में उत्तम गुरुवर स्वामी " दयानन्दसरस्वती जी " प्रभु के मार्ग को झट पट चले गये ॥ २० ॥

वेदोपदेशकरुणामृतसागरो यो दृष्टोपि दृष्टिपथतो यमगोचरोभू-न्नानापथातपवितप्तविचेतसोस्मान् संचेतयिष्यति पुनर्निजसद्गुणैः कः ॥ २१ ॥

जो वेदोपदेश करुणारूपी अमृतसागर देखा हुआ भी दृष्टिमार्ग से छिप गया (देखते २ छिपाय गया) तो नानामार्गों के आतप से विविध प्रकार तपे हुए विकल चित्त हम लोगों को फिर अपने अच्छे २ गुणों से कौन संचेतित करावेगा, अर्थात् जो वेदोपदेशकरुणारूपी अमृतसागर श्रीमद्द० स० देखे हुए भी दीखते २ छिप गये तो नानामत मतान्तरों के संताप से संतप्त हुए विकलचित्त जो हमलोग उन्हें फिर अपने उत्तमोत्तम गुणों से कौन अच्छे प्रकार बोध करावेगा ॥ २ ॥

संस्थापितोनिजसभासुनिराश्यसर्वानस्मानयंविधिनिधिर्यद्होविधातः । तत्रापि धर्मविषयेस्ति कुतूहलं किं कोलाहलो नवपथैरथसम्प्रदायैः ॥ २२ ॥

हे विधाता बड़े आश्चर्य का विषय है कि हम सबों को निराश कर जो यह वेदविधि श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी आपने अपनी सभाओं में स्थापित किये तो क्या वहां भी धर्म के विषय में कुतूहल (कौतुक) ही रहा है अर्थात् जैसे सम्प्रदायी जन नानाप्रकार के चित्र विचित्र चरित्र कर रहे हैं किंवा नवीन मार्ग वाले निज सम्प्रदायों से कोलाहल अर्थात् शैवपन्थ वाले शिव को परब्रह्म, विष्णुपन्थ वाले विष्णु को गणपति वाले गणपति को परब्रह्म मान एक दूसरे को मिथ्या बतलाते पर यह भी कोई नहीं कहता कि परमेश्वर अनेक हैं, इधर नानकपन्थी नानक जी की वाणी के आगे वेद ही को नहीं गिनते इधर ईसाई भाइयों का यही कौल है कि प्रभु ईसामसीह संसार के तारने को आया जो उस पर ईमान लाता है वही मुक्ति पाता है उधर मुसल्मान भाई अपने मत से अन्य मत वालों को काफिर, बतलाते और कहते हैं कि खुदा का कलाम कु-

रानशरीफ हज़रत मुहम्मद से पाया गया जो इस पर ईमान न लावे वह झूठा और काफिर है और वह खुदा के पास कभी नहीं आ सकता बल्कि ऐसे काफिर न पैदा होते तो अच्छा था । इत्यादि २ अपलाप मचारहे हैं वैसे ही क्या वहां भी अपलाप हो रहा था ॥ ६२ ॥

किं वा समीक्षणविधौ सुकृतस्य लोकेऽन्यत्रैव कुत्रचिदपि द्वयमुक्तमीश ! दृष्ट्वा नृणां हितकरः करुणाम्तीत्यानाहत्य नः श्रुतिनिधिः स समीरितो यत् ॥ २३ ॥

हे ईश ! हे ईश्वर !! किं वा और ही कहीं किसी लोक में उक्त दोनों विषयों को देख करुणा छोड़ हम लोगों का अनादर कर मनुष्यों का हितकरने वाले जो वेदनिधि श्रीमद्द० स० जी थे उन को उत्तम कर्म के विवेक करने के निमित्त आपने भेज दिया॥

संसारसारविरतस्य परंगतस्य प्रादुर्भवो भुवि तवैष नृणां दयालो ! ॥ संतारणाय दुरितोदधितः श्रुतीनां संचारणाय चिरमन्दगतिं गतानाम् ॥ २४ ॥

हे दयालो ! स्वामीदयानन्दसरस्वती जी संसारसार से निवृत्त चित्त ! जो आप का भूमण्डलपर यह प्रादुर्भाव होना तो दुरितरूपी समुद्र से मनुष्यों को तारने और चिरकाल से मन्दगति को प्राप्त हुई श्रुतियों के अच्छे प्रकार चलाने के लिए हुआ था ।

त्यक्त्वा प्रतिश्रुतमपि श्रुतिभाष्यकर्म यन्नैत्यकं सदुपदेशमयो विहाय । कालेन सार्द्धमगमस्तदिदं तवैव संयुज्यतेभिबलवत्तातिसाहसेन ॥ २५ ॥

जो आप प्रतिज्ञात नैत्यक वेदभाष्य के काम को छोड़ तथा उत्तम उपदेश अर्थात् वेदमार्ग और देशोन्नतिविषयक अतिप्रिय अपने वादविवाद को छोड़ काल के साथ चले गये सो यह काम हे बलवान् अति साहस से आपही को संयुक्त होता है दूसरे का क्या सामर्थ्य है कि जो प्रिय काम को छोड़ ऐसा साहस करे ॥ २५ ॥

विद्योतिता सदुपदेशमयी विचिन्त्यदीपावलीनिजगमक्षणमन्धकारम् । नैषा भविष्यति भवद्द्युतिदा दयालो यद्दीपदीपनमहद्युतितां न याति ॥ २६ ॥

हे दयालो श्रीमद्द०जी आपने अपने जाने के समय होने वाले अन्धकार का चिन्तन कर जो यह सदुपदेश मयी दिवाली प्रकाशित करादी सो आपकी द्युति अर्थात् पूर्णकान्ति को देने वाली न होगी क्योंकि जो दीप का प्रकाश है वह सूर्य के प्रकाश की समता को नहीं पाता ॥ २६ ॥

हे श्रौतसारनिरत ! प्रसमीक्ष्य मन्देष्वस्मासु दुःसहम-
तीत्य निवासमत्र । स्वरय· प्रयासमुपदेशविधौ चिराय प्राप्तः
परंपदमनन्तसुखाय तेऽस्तु ॥ २७ ॥

हे ! वेदसिद्धान्त निरत श्रीम० द० जी ! हम मन्द लोगों में यहां अपने, निवासको दुःसह विचारि उस निवास और उपदेश करने में अतिकालतक परिश्रम को छोड़ जो आप परमपद को प्राप्त हुए वह परमपद आप को अनन्त सुख देने के लिये हो।

नानादेशनिवासिभिर्बहुजनैर्मानापमानं मुहुः संप्राप्याखिललोकसौख्यनिरतो खेदं निवेद्याधुना ॥ लोकेभ्यः सदसद्विवेकमतुलं विस्तार्य संधार्य च प्रेमास्पदमथो जनेषु नितरां प्राप्तः पदं शाश्वतम् ॥ २८ ॥

समस्त लोकों के सुख होने में निरन्तर चित्त दिये हुए नाना देशनिवासी जनोंसे बहुत मान अपमान को वार २ अच्छे प्रकार प्राप्त सब को खेद का निवेदन कर लोकों के लिये भले बुरे का अपरिमित विवेक विस्तार और मनुष्यों में निरन्तर प्रेमास्पद का चिन्ह उत्तमता से धारण करा शाश्वत परमपद को प्राप्त हुए ॥२८॥

ययादत्तमन्त्यंपुरोर्द्धेनमध्यं सुयद्धंतदर्द्धेनवान्यः परोमित् ।
सरोग्रेसरश्चाद्यसत्तार्थरक्तस्त्रियोक्तःकनौनोनरेस्तंगतोसौ २९

जिस दया शब्द ने निज अर्द्धभाग से अन्त्याक्षर और पूर्वाक्षर का ग्रहण किया तथा उस के मध्यभाग को अपने आधे भाग से बांधा अर्थात् मध्य को परिपूर्ण न किया तौ भी उत्तमता से उस को अपने वश में किया उस समुदाय से और (आगे) नकार तथा इत् जिस का ऐसा नुम् का नकार है इस "दयानन्द" समुदाय से अग्रगामी, सत्तार्थक प्रथम तद्धित अर्थात् मतुप् प्रत्यय में रमा हुआ स्त्रीलिङ्ग से युक्त सरस् शब्द है यह दयानन्द सरस्वती समुदाय मनुष्य अर्थ में क्तन् प्रत्यय से कन जिस मनुष्यव्यक्ति का वाचक था वह व्यक्ति अस्त को प्राप्त हुई

अज्ञानजन्यतिमिरव्रजनाशको यो वेदोपदेशकदिनद्युतिरस्तमापत् । तच्छोकमार्यगणकः कथितुं समर्थो धैर्यं विधेयमवलम्ब्य तदुक्तियुक्तीः ॥ ३० ॥

हे आर्य्यगण ! अज्ञानजन्य अन्धकार के समूह का नाशकरने वाले जो वेदोपदेशक सूर्य्य श्रीस्वामीद० स० जी थे वे अस्ताचल को प्राप्त हुए। उस शोक के कहने को कौन समर्थ है। इस से उक्त महात्मा की उक्ति और युक्तियों का अवलम्बन कर हम लोगों को धैर्य धरना करना चाहिये ॥ ३० ॥ इति